संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक : ०२ ● ०६ जनवरी २०१८ माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

कड़कड़ाती सर्दी में सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी द्वारा सड़क पर सो रहे लोगों को कम्बल बाटें गये ।

(लखनऊ) : दिनॉक 1/01/2018 की कड़कती ठंड को देखकर सभा प्रधान डा0 धीरज सिंह जी अपने आपको रोक नहीं पाये और तुरन्त गाँधी आश्रम से कम्बल मंगवाकर रात में 10 बजे कम्बल बांटने निकल पड़े। गोमती नदी की तरफ फुटपात सो रहे असहाय लोगों को जगाकर कम्बल बांटा। डा0 धीरज सिंह जी ने मनवता का परिचय देते हुए उनके दुःख को महसूस किया और निकल पड़े आधी रात को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के कर्मचारियों के साथ कम्बल बांटने, कुछ लोग सोते रहे उन्हें शायद पता भी नहीं होगा कि कोई रात को आकर उनके ऊपर दया की चादर डाल गया। सभा प्रधान जी जब डालीगंज में गोमती पुल पर सो रहे लोगों को फटी चादर और प्लास्टिक की बोरी लिपटे हुए देखा तो उनका हृदय करूणा से भर आया और बिना जगाये एक तरफ उन असहाय लोगों पर अपनी दया की चादर डालनी शुरू कर दिया। यह लोगों के लिये एक उदाहरण है कि जो लोग गरीब और निर्बलों के अधिकार को आसानी से हजम कर जाते हैं कास उन्होंने इस सर्दी में आधी रात को आकार देखा होता तो शायद उनका हृदय भी पिघल गया होता लेकिन उन लोगों का स्वभाव बन चुका है। गोमती पुल पर कुछ एसे भी लोग थे जो गांव से मजदूरी करने आये थे और सुबह का इन्तजार कर रहे थे जिन्हें आज काम नहीं मिला और अपने घर जाने के लिए बैठे थे आज उनके साथ भी समय बिताया गया सभा प्रधान जी ने उनसे पूछा क्या तुम्हारे पास जाने का किराया है तब उन लोगों ने हां मे सिर हिलाया तब आपने कहा कि किसी पेड़ के नीचे जाकर सो जाइये और अपने हाथों से कम्मल उढ़ाकर सभा चलने का आग्रह किया। इस पर उन लोगों ने कहा बाबूजी आधी रात हो चुकी है और सीतापुर रोड पर से कोई न कोई सवारी मिल ही जायेगी हम उसी से घर निकल जायेंगे । इस तरह अपनी टीम के साथ नमस्कार करके वहां से आगे की ओर चल दिये। आज अपने टीम से विचार करते हुए सभा प्रधान जी ने कहा कि आने वाले समय में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भी रैन बसेरा बनाया जायेगा और असहाय लोगों को उसमें रूकने की व्यवस्था की जायेगी। यह मेरा भविष्य में प्रयास रहेगा कि समय समय पर कुछ एसे कार्यक्रम हो जिसमें गरीबों को वस्त्र भी बांटे जायें। इस अवसर पर संस्था के कर्मचारी सर्वश्री गम्भीर सिंह, हरीश कुमार शास्त्री, प्रताप सिंह चौहान, मुकेश सिंह आदि कार्यकर्ताओं ने भविष्य के लिये एक नयी प्रेरणा को लेकर रात्रि में सभा की तरफ वापसी किया।

मीनारो से मत नापिये इस मुल्क की तकदीर को असली हिन्दुस्तान तो फुटपाथ पर है ।

-हरीश कुमार शास्त्री

आर्य समाज नजीबाबाद बिजनौर का वार्षिक सम्मेलन समारोह सम्पन्न

30–31 दिसम्बर, 2017 को आर्यसमाज नजीबाबाद बिजनौर का 117 वां वार्षिक समारोह का अयोजन हुआ सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सभा मन्त्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रांगण में आर्य जनता एवं आर्य बालिकाओं को सम्बोधित किया उन्होंने माता–पिता आचार्य (गुरूजनों) को देवता के रूप में पूजने अर्थात् अभिवादन आज्ञापालन एवं सम्मान करने पर बद देते हुए कहा कि इसी से आपका भी मान सम्मान होगा तथा आयु विद्या यश, और बल की वृद्धि होगी स्वामी जी का प्रबन्धक पवन कुमार आर्य ने भव्य स्वागत किया। श्री सत्यवीर जी आर्य ने अध्यक्षता की तथा विकास आर्य ने संयोजन किया कार्यक्रम में श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री, श्री हर प्रसाद शास्त्री, विक्रमदेव जी, कृष्ण मुनि, वानप्रस्थी ने भी विचार रक्खे छात्राओं के कार्यक्रम प्रभावशाली रहे कार्यक्रम में प्रधान सुशील जी, मन्त्री प्रषवीर आर्य, जिला संयोजक अमन सिंह, श्री दिलावर सिंह जी, यशवीर सिंह, मनजीत सिंह प्रधानाचार्य सहित जिले के सभी आर्य जन भारी संख्या में उपस्थित रहे। अधिकारियों को शुभकामनाऐं।

ओ३म्

संस्थापित–1885 फोन नं0–0522–2286328

श्रीमद्दयानन्दाब्द–193

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक– 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार

दिन– शनिवार एवं रविवार

(तिथि–माघ शुक्ल दशमी एवं एकादशी) सम्वत्–2074)

अधिवेशन स्थल– सभा भवन प्रांगण– 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी/अन्तरंग सदस्य/प्रतिनिधि/ आर्य बन्धुओं/ बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः 08.00 बजे से सायं 06.00 बजे तक डॉ0 धीरज सिंह–का0 प्रधान/प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में का0 प्रधान/प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/– प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/–।

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/– वार्षिक।

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/– इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/– अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/– के हिसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/– दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/– आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/– भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी। इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–15 जनवरी, 2018 तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। **बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ** के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेशनीय एजेण्डा नियमानुसार समय से भेज दिये जायेंगे। सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

(डॉ0 धीरज सिंह) सभा प्रधान — (अरविन्द कुमार) कोषाध्यक्ष — (स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती) सभा मन्त्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

खुद के बुने जाल में उलझ गया पाकिस्तान

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रप ने नये साल के शुरूआत में ही पाकिस्तान के खिलाफ अपने ट्विटर पर उसकी सारी कलाई खोल कर रख दी। पाकिस्तान अमेरिका से मिलने वाले फन्ड का दुरूपयोग कर रहा है यह ट्रप द्वारा खुलासा किये जाने से हड़कम्प मच गया है। पाकिस्तान का आतंकवाद के खिलाफ फर्जी नीति चर्चा का विषय बन गया है। पाकिस्तान कभी यह स्पष्ट नहीं कर सका की आतंकवाद के खिलाफ उसकी लड़ाई किस तरह से हो रही है। पाकिस्तान की सरकारी मीशनरी जिससे वहां की सेना, राजनीतिक वर्ग, और विदेश विभाग शामिल है, सब ने ट्रप के बयान की अलोचना की है। पाक को तो ट्रंप के इस कदम का पहले से ही ऐहसास हो जाना चाहिए था जब हाल ही में माइक पेंस ने अफगानिस्तान प्रवास के दौरान कहा था कि ट्रंप की नजर पाकिस्तान पर है।

यह जग जाहिर है कि अमेरिका को यह पता था कि पाकिस्तान अफगानिस्तान में उसके हितों के खिलाफ काम कर रहा है, मगर करांची बन्दरगाह पर निर्भरता और इस उम्मीद में कि वह अपनी नीति बदल देगा। उसने यथास्थिति बनाये रखी। अमेरिका की वर्षों पुरानी चुप्पी ने पाक को अच्छे और बुरे आतंकवादी समूह की नीति को जारी रखने का मौका दिया। सच्चाई यह भी है कि अमेरिका को लश्करे तैयबा, हिजबुल मुजाहिदीन और जैसे भारत विरोधी आतंकी गुटों की मौजुदगी भी जानकारी रही, पर अमेरिका लम्बे समय तक इस ओर अपनी आंखे बन्द किए रहा।

पाक की जमीन पर ओसामा बिन लादेन और मुल्ला मंसूर के मारे जाने के बाद भी पर्याप्त कार्यवाही किये जाने का अच्छा खासा मौका था। पर अमेरिका ने कुछ नहीं किया अमेरिका अच्छी तरह से जानता है कि अफगानिस्तान में वह जब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि पाकिस्तान उसका साथ न दे। और आतंकी गुटों के सरगनाओं से अपनी जमीन से बेदखल न करें। अफगानिस्तान में अमेरिकी हवाई और ड्रोन हमलों से घिरने के बाद उन्हें बातचीत की मेज पर लाया जा सकता था। वार्ता के जरियें ही अमेरिका अफगानिस्तान में शान्ति बहाली और अपनी वापसी की उम्मीद कर सकता है। अभी हाल ही में पाक सेना ने कुछ अमेरिकी नागरिकों को हक्कानी गुट के कब्जें से छुड़ाया। और दावा किया कि यह संयुक्त अभियान था। एक अपहरण कर्ता को जिन्दा पकड़ा गया था। अमेरिका उससे पूछताछ करना चाहता था। पर पाकिस्तान ने ऐसा करने से मना कर दिया। ट्रंप की नाराजगी का यह भी एक बहुत बड़ा कारण है। ट्रंप को लगता है कि उसने पाकिस्तान को काबू में कर लिया है। ऐसा लगता है कि अब ट्रंप पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिए मानसिक स्तर पर तैयार हो चुके हैं।

पाकिस्तान को चीन से वांछित राजनायिक समर्थन मिल सकता है। पर पाक अपने ही बुने जाल में उलझता ही चला जा रहा है। यदि पाक अमेरिका के दबाव में आतंकी गुटों के खिलाफ कोई कार्यवाही करता है तो उसे आतंकी गुटों की नराजगी झेलनी पड़ सकती है। टी.टी.पी. जैसे गुटों पाक ने ही पैदा किया है। टी.टी.पी. पाक सेना के लिए पैदा कर सकता है। इसे नहीं लगता कि पाकिस्तान समय से कार्यवाही करने का साहस कर पायेगा। आतंकी गुटों के खिलाफ कार्यवाही में लचीलापन दिखाने की वजह यह भी है कि पाक अफगानिस्तान को भारत के नजरिये से देखता है। वह काबुल में तालीबान की अगुवाई वाली सरकार पर नियंत्रण चाहता है। जो संभव नहीं प्रतीत होता है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

अदेवृघ्न्यपतिघ्नीहैधि शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चाः।
प्रजावती वीरसूर्देवृकामा स्योनेममग्निं गार्हपत्यं सपर्य।।

अथर्व०-का० १४। अनु० २। मं० १८।।

हे (अपतिघ्न्यदेवृघ्नि) पति और देवर को दुःख न देने वाली स्त्री तू (इह) इस गृहाश्रम में (पशुभ्यः) पशुओं के लिये (शिवा) कल्याण करनेहारी (सुयमा) अच्छे प्रकार धर्म-नियम में चलने (सुवर्चाः) रूप और सर्वशास्त्र विद्यायुक्त (प्रजावती) उत्तम पुत्र पौत्रादि से सहित (वीरसूः) शूरवीर पुत्रों को जनने (देवृकामा) देवर की कामना करने वाली (स्योना) और देनेहारी पति वा देवर को (एधि) प्राप्त होके (इमम्) इस (गार्हपत्यम्) गृहस्थ सम्बन्धी (अग्निम्) अग्निहोत्र को (सपर्य) सेवन किया कर।

तामतेन विधानेन निजो विन्देत देवरः।। मनु०।।

जो अक्षतयोनि स्त्री विधवा हो जाय तो पति का निज छोटा भाई उससे विवाह कर सकता है।

प्रश्न- एक स्त्री वा पुरूष कितने नियोग कर सकते हैं और विवाहित नियुक्त पतियों का नाम क्या होता है?

उत्तर- सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।।

-ऋ० मं० १०। सू० ८५। मं० ४०।।

हे स्त्री! जो (ते) तेरा (प्रथमः) पहला विवाहित (पतिः) पति तुझ को (विविदे) प्राप्त होता है उस का नाम (सोमः) सुकमारतादि गुणयुक्त होने से सोम, जो दूसरा नियोग होने से (विविदे) प्राप्त होता वह (गन्धर्वः) एक स्त्री से संभोग करने से गन्धर्व, जो (तृतीय उत्तरः) दो के पश्चात् तीसरा पति होता है वह (अग्निः) अत्युष्णतायुक्त होने से अग्निसंज्ञक और जो (ते) तेरे (तुरीयः) चौथे से लेके ग्यारहवें तक नियोग से पति होते हैं वे (मनुष्यजाः) मनुष्य नाम से कहाते हैं। जैसे (इमां त्वमिन्द्र) इस मन्त्र में ग्यारहवें पुरूष तक स्त्री नियोग कर सकती है, वैसे पुरूष भी ग्यारहवीं स्त्री तक नियोग कर सकता है।

(प्रश्न) एकादश शब्द से दश पुत्र और ग्यारहवें पति को क्यों गिने?

(उत्तर) जो ऐसा अर्थ करोगे तो 'विधवेव देवरम्' 'देवरः कस्माद् द्वितीयो वर उच्यते' 'अदेवृघ्नि' और गन्धर्वो विविद उत्तरः' इत्यादि वेदप्रमाणों से विरूद्धार्थ होगा क्योंकि तुम्हारे अर्थ से दूसरा भी पति प्राप्त नहीं हो सकता।

देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ् नियुक्तया।
प्रजेप्सिताधिगन्तव्या सन्तानस्य परिक्षये।।१।।
ज्येष्ठो यवीयसो भार्य्यां यवीयान्वाग्रजस्त्रियम्।
पतितौ भवतो गत्वा नियुक्तावप्यनापदि।।२।।
औरसः क्षेत्रजश्चैव०।।३।। मनु०

इत्यादि मनु जी ने लिखा है कि (सपिण्ड) अर्थात् पति की छः पीढ़ियों में पति का छोटा वा बड़ा अथवा स्वजातीय तथा अपने से उत्तम जातिस्थ पुरूष से विधवा स्त्री का नियोग होना चाहिये। परन्तु जो वह मृतस्त्रीपुरूष वा विधवा स्त्री सन्तानोत्पत्ति की इच्छा करती हो तो नियोग होना उचित है। और जब सन्तान का सर्वथा क्षय हो तब नियोग होवे। जो आपतकाल अर्थात् सन्तानों के होने की इच्छा न होने में बड़े भाई की स्त्री से छोटे का और छोटे की स्त्री से बड़े का नियोग होकर सन्तानोत्पत्ति हो जाने पर भी पुनः वे नियुक्त आपस में समागम करें तो पतित हो जायें। अर्थात् एक नियोग में दूसरे पुत्र के गर्भ रहने तक नियोग की अवधि है, इसके पश्चात् समागम न करें और जो दोनों के लिए नियोग हुआ हो तो चौथे गर्भ तक अर्थात् पूर्वोक्त रीति से दस सन्तान तक हो सकते हैं। पश्चात् विषयासक्ति गिनी जाती है, इस से वे पतित गिने जाते हैं और जो विवाहित स्त्री भी दशवें गर्भ से अधिक समागम करें तो कामी और निन्दित होते है? अर्थात् विवाह वा नियोग सन्तानों ही के अर्थ किये जाते हैं पशुवत् कामक्रीडा के लिए नहीं।

(प्रश्न) नियोग मरे पीछे ही होता है वा जीते पति के भी?

(उत्तर) जीते भी होता है-

अन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्।। -ऋ० मं० ११ । सू० १०।।

जब पति सन्तानोत्पति में असमर्थ होवे तब अपनी स्त्री को आज्ञा देवे कि हे सुभगे! सौभाग्य की इच्छा करने हारी स्त्री तू (मत्) मुझ से (अन्यम्) दूसरे पति की (इच्छस्व) इच्छा कर क्योंकि अब मुझ से सन्तानोत्पत्ति की आशा मत कर। तक स्त्री दूसरे से नियोग करके सन्तानोत्पत्ति करे परन्तु उस विवाहित महाशय पति की सेवा में तत्पर रहै। वैसे ही स्त्री भी जब रोगादि दोषों से ग्रस्त होकर सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ होवे तब अपने पति को आज्ञा देवे कि हे स्वामी आप सन्तानोत्पत्ति की इच्छा मुझ से छोड़ के किसी दूसरी विधवा स्त्री से नियोग करके सन्तानोत्पत्ति कीजिये। जैसा कि पाण्डु राजा की स्त्री कुन्ती और माद्री आदि ने किया और जैसा व्यास जी ने चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य के मर जाने पश्चात् उन अपने भाइयों की स्त्रियों से नियोग करके अम्बिका में धृतराष्ट्र और अम्बालिका में पाण्डु और दासी में विदुर की उत्पत्ति की। इत्यादि इतिहास भी इस बात में प्रमाण है।

प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः। विद्यार्थं षड् यशोऽर्थं वा कामार्थं त्रींस्तु वत्सरान्।।१।।
वन्ध्याष्टमेऽधिवेद्याब्दे दशमे तु मृतप्रजाः। एकादेश स्त्रीजननी सद्यस्त्वप्रियवादिनी।।२।। मनु०।।

– क्रमश :

धरोहर

आर्य जगत् के तपस्वी उपदेशक-

श्री धर्मवीर जी धर्मी

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

श्री धर्मवीर जी धर्मी एक ऐसा जाना पहिचाना नाम है जो मेरठ, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, जिले के ग्राम–ग्राम में आबाल वृद्ध द्वारा सुना जा सकता है वे एक सरल स्वभाव के तपस्वी साधु–सन्त की तरह रहकर प्रचार करते थे। आपके पास एक पुरानी टूटी सी साइकिल सहयोगी के रूप में रहती थी उससे पहले उसका भी अभाव था पैदल यात्री के रूप में ग्राम–ग्राम में जाकर आर्य समाज का प्रचार प्रसार करते थे आप यज्ञ संस्कार एवं संस्कृत भाषा के साथ अंग्रेजी फारसी उर्दू भाषा में बोलने का अधिकार रखते थे और कवित्व शक्ति के रूप में आपका पूरा अधिकार था विशेष रूप से आप दोहे बनाने में प्रसिद्धि को प्राप्त हो गए थे आप एक श्वेत अधेवस्त्र तथा एक उत्तरीय वस्त्र द्वारा ही वर्षा और गर्मी का समय व्यतीत करते थे। आपको महात्मा जी भी कहते थे पांव में चमड़े की जूती तथा वृद्धावस्था में आकर चश्मे लगाकर ही उसे अपना आभूषण समझते थे।

आपका जन्म कलौन्दा ग्राम में हुआ था जो पहले बुलन्द शहर में फिर गो० बु० नगर में आ गया है प्रसिद्ध ग्राम है आपका परिवार भरा परिवार है गृहस्थ आश्रम में रहकर एकमात्र सन्तान को पैदा किया वह आज भी अपने सद्गुणों से अपने माता पिता के यश की वृद्धि कर रहे हैं। ग्राम में आर्य समाज मन्दिर बना हुआ है जो ग्राम स्तर पर क्षेत्र में अच्छा मन्दिर है जो आपके पुरूषार्थ का प्रतीक है। आजीवन वेद एवं आर्य समाज के प्रचार का आपने जो व्रत लिया उसका मूल कारण महात्मा लटूर सिंह जी एवं महात्मा अमर स्वामी जी महाराज रहे हैं दोनों को अपना आदर्श और गुरूजी के रूप में सम्मान प्रदान करते थे आपने जीवन का ममुख्य लक्ष्य बनाऊँगा व्यापार नहीं अपितु मिश्नरी भाव से कार्य करूँगा। ३. जीवन में कभी दक्षिणा नहीं मागूंगा जो भी कोई श्रद्धा से दे देगा उसी के द्वारा अपना और परिवार का पालन–पोषण करूंगा, उसे आपने आजीवन निभाया आपने "ज्ञान की गंगा" पुस्तक लिखी जिसमें विदुरनीति चाणक्य नीति के श्लोकों का सार कविता रूप में है लगभग ३० पुस्तकें छोटी–छोटी हैं जैसे धर्मी का ज्ञान, धर्मी का ध्यान, धर्मी का कोष धर्मी के गीत, धर्मी की खोज आदि–आदि नाम हैं।

आप आयुर्वेद के भी मर्मज्ञ अनुभवी वैद्य थे आप प्रचार के साथ चिकित्सा भी किया करते थे, अपने प्रचार से पूर्व इसी प्रकार शुभारम्भ किया करते थे–

हैड़ बहेड़ा आंवला खांड मिलाकर जाय।
दूध पीवे मन भावता दूर बुढ़ापा जाये।।
हैड़ बहेड़ा आंवला जो नित्य प्रति खाय।
धर्मी निश्चय जानिये वैद्य पास नहीं आय।।

अपने प्रचार में गोमाता की सेवा की प्रशंसा किया करते थे– एजी–एजी जगत् में गोमाता सुखदाता।

गाय का जो दूध पी वे दुःख वो उठावे नहीं।
गाय का जो घी खावे आंख का दिखावे नहीं।।
मक्खन से जो मालिश करे सफे दबाल आवे नहीं।
मट्ठे का जो पीने वाला पेट को दिखाने नहीं।।
हो जाता बलवान् ।।१।। एजी...

इस प्रकार गोमाता के गोवर एवं मूत्र द्वारा भी बहुत लाभ बताते हुए भजन सुनाया करते थे तो लोग हंसते–हंसते लोट–पोट पो जाया करते थे।

आपकी व्यायाम में भी रूचि थी विशेष मोगरी का घुमाना आपकी पहिचान थी चित्सौना ग्राम में जब १६८२ में जाना हुआ वहां आर्य समाज का उत्सव किया तब वहां के पुराने और युवकों ने बताया जिसमें श्री रामवीर शर्मा एवं हरपाल सिंह आर्य आज भी विद्यमान हैं वे कहते हैं कि आदर्श उपदेश थे श्री धर्मी जी जब वे युवा थे हम बच्चे थे तब मोगरी का व्यायाम प्रदर्शन करके ग्रामीण युवाओं को प्रेरणा प्रदान करते रहते थे उनके प्रचार करने का तरीका सस्ता और सरल तथा समर्पण भाव से मिशनरी कार्यकर्ता की तरह था जिसे कोई कभी भी कहीं भी सम्पन्न कर सकता था उसके लिए न माइक न मंच और सग्मियाना लगाने की भी आवश्यकता नहीं समझते थे न वे भीड़ की ही अपेक्षा करते थे किसी भी परिवार में बुलाकर सम्मान से उन्हें यदि कोई प्रार्थना करता कि कुछ उपदेश सुना दीजिए तभी वे बिना आलस्य के निरहंकारी होकर स्नेहिल उपदेश देकर कृतार्थ किया करते थे। मैं बचपन से ही उन्हें अपना गुरूजी कहा करता था वे भी मुझे शिष्य और पुत्रवत् स्नेह तथा आशीर्वाद दिया करते थे गौरक्षा, आन्दोलन के समय ६ मास जेल में लुधियाना रहना पड़ा तब वे भी वहीं पर जत्थे में आये थे और प्रतिदिन सारे सत्याग्रही सत्संग का लाभ उठाया करते थे उनके साथ उनके एक शिष्य हैं रामवीर आर्य वे भी साथ थे वे सेवा करते थे तथा प्रचार में ढोलक बजाया करता। साथ में भजन बुलवा देता स्वयं भी पृथक से कुछ भजन सुना देता था इतिहास महाभारत के सन्दर्भों को प्रेरणा प्रद सुनाया करते थे।

एक बार आपने एक अपने जीवन का संस्मरण सुनाया बोले एक दिन हमारा कोई भक्त मिला बोला गुरू जी कभी हमारे घर पर आकर हमें कृतार्थ करो हमारा घर पवित्र हो जायेगा हमने उसकी श्रद्धा देखकर डायरी में उसका पता लिखा लिया और उसे पूर्ण आश्वस्त कर दिया कि भाई समय मिलने पर अश्वयमेव आयेंगे उन दिनों फोन व्यवस्था नहीं थी बुलन्दशहर अलीगढ़ सीमा जुड़ा कोई ग्राम था प्रचार करते हुए उस क्षेत्र में जाना हो गया तब याद आया अरे बड़ी श्रद्धा से भक्त ने कहा था भूख भी लग रही अपने क्षेत्र में जाने का समय भी नहीं हैं एक दो दिन खाली भी हैं उधर प्रचार होगा तो कुछ लोग आर्य समाज से जुड़ जायेगें यह सोचकर उसके ग्राम की दिशा का पता लोगों से पूछा तो उन्होंने २० कि०मी० बताया हमने सोचा कोई बात नहीं आज रात्रि का प्रचार वहीं पर होगा चलते–चलते साइकिल द्वारा शाम हो गई उसके ग्राम से उसके घर पर गए सायं काल होते समय किसान पशुओं की सुरक्षा एवं चोर की व्यवस्था करते हैं ईख के ऊपर के भाग को चार बनाते हैं वह हाथ से मशीन चलाकर भी होता है उसी कार्य में संलग्न था हमें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ चरण स्पर्श किया और प्रसन्नता से भाव विभोर हो गया जैसे विदुर के घर पर श्री कृष्ण जी आ गए हों बार–बार कृतज्ञता ज्ञापित करने लगा हमारे अहोभाग्य आज कुटिया के भाग्य घुल गए घर पवित्र हो हम तो धन्य हो गए गुरूजी आप आज्ञा दें तो मैं चारा पूरा काट लूं मैंने कहा कि भाई यह कार्य आवश्यक है करो उसमें लगभग आधा घण्टा लगा दिया फिर पशुओं को अन्दर करने लगा फिर उसने दीपक लालटेन जलाई और आकर पास में बैठ गया उसके घर से दूर यह घेर था जहां मनुष्य एवं पशु रहते हैं खाट के नाम पर एक ही थी अतः बोला अन्दर पुआल डाली हुई है ठण्ड के कारण चलो उधर ही बैठते हैं उसी के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया और बैठकर फिर प्रशंसा में लग गया मैं बोला अरे इतनी देर हो गई पानी रोटी कुछ खिलायेगा या नहीं बातों से पेट नहीं भरता है क्या? तब उसे लगा यह तो अपराध हो गया भागकर घर गया घर से मोटी–मोटी रोटी और गुड़ तथा प्याज औ अचार लेकर आया बोला कि सब्जी तो जल्दी में बनी नहीं आज आप इसी से काम चलाइये।

भोजन देखकर भूख भाग गई प्यास लगी थी पानी ठण्ड होते भी पिया फिर एक रोटी चबा–चबा कर खाई उसमें प्यार का स्वाद अधिक था भूख और परिश्रम द्वारा पचाने की भी क्षमता थी फिर बोला गुरू जी कुछ इतिहास सुनाओं रात के १० बजे तक वह अकेला श्रोता था और मैं अकेला वक्ता था यही वेद प्रचार का तरीका था रात्रि की ठण्ड में जब बिस्तर नहीं मिले तब उसी पुआल में ऊपर से एक मोटा सा कपड़ा खेश–दुताई जैसा डाल दिया और वही पर रात गुजारकर प्रातः होते ही चल पड़े उसने बहुत रोका पर हमें लग रहा था कि यहां पर न दूध मिलेगा न दक्षिणा मिलेगी न जनता इसके कहने से आयेगी आज का अनुभव पूरे जीवन याद रहेगा प्रातः उठकर बोला गुरू जी अभी नहीं जाने दूंगा तब हमने कहा किसी जन्म का बदला ले रहा है ऐसे ही दो दिन रह गये तो यहां से हम नहीं जायेंगे हमें फिर अर्थी पर ही ले जाना पड़ेगा तुझे हमारे घर का भी पता नहीं अन्तिम संस्कार करने की तेरे

शेष पृष्ठ ४ पर

मुनिवर पं० गुरूदत्त विद्यार्थी

पं० गंगा प्रसाद विद्यार्थी
एम.ए.एम.फिल्, जबलपुर

जन्म : श्री गुरूदत्त का जन्म पंजाब के मुल्तान नगर में २६ अप्रैल १८६४ ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम लाला रामकृष्ण सरदाना था। फारसी के नामी पण्डित और शिक्षा विभाग में सुयोग्य अध्यापक थे। गुरूदत्त को अपने पिता से उत्तम शारीरिक बल, तीव्र बुद्धि और दृढ़ स्मरण शक्ति माता से संयम और धैर्य तथा कुल जन्य वीरता उत्तराधिकार में मिले।

शिक्षा : गुरूदत्त के पिता ने घर पर ही उनको उर्दू, फारसी तथा सामान्य ज्ञान की शिक्षा दी, और ८ वर्ष की आयु में उन्हें झंग के अपने ही स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। वहां से मिडिल पास करने के बाद वह अपनी जन्म भूमि मुल्तान चले गए और वहां एक हाईस्कूल में भरती हो गए गुरूदत्त में अध्ययन की रूचि बहुत थी। वे स्कूली पुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकालय से बहुत सी ज्ञान की पुस्तकें आत्मसात करते रहते थे। आप मैट्रीकुलेशन परीक्षा में पंजाब प्रान्त भर में पांचवें नम्बर पर आए। जनवरी १८८१ में आप गवर्नमेंट कालेज लाहौर में भरती हो गए। उस समय पंजाब में वहीं एक मात्र कालेज लाहौर में भरती हो गए। उस समय पंजाब में वही एक मात्र कालेज था। सन् १८८३ में गुरूदत्त ने एफ०ए०० पास किया। और युनिवर्सिटी भर में सर्वप्रथम रहे। सन् १८८५ में गुरूदत्त ने बी०ए० पास किया और फिर युनिवर्सिटी भर में प्रथम रहे। लाला हंसराज ने इसी परीक्षा में द्वितीय स्थान पाया था। सन् १८८६ में गुरूदत्त ने फिजिक्स अर्थात् पदार्थ विज्ञान में एम०ए० पास किया और पुनः न केवल सर्वप्रथम रहे बल्कि इतने अधिक अंक पाए जितने कि तब तक किसी भी भारतीय ने न पाए थे।

शिक्षक : एम०ए० पास करने के बाद पं० गुरूदत्त गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर में साइन्स के प्रोफेसर बनाए गए। वह पहिले ही भारतीय थे जिन्हें यह पद प्राप्त हुआ था। कालेज में इनकी योग्यता और शिक्षणशैली की धाक जम गई। दो तीन वर्ष तक ही अपने इस पद पर काम किया। जब आपने देखा कि इस पद पर रहने से उनके आर्यसमाज के प्रचाकार्य में विघ्न पड़ता है तो उनने त्यागपत्र दे दिया और कालेज के अधिकारियों तथा अन्य हितैषियों के दबाव को भी अमान्य कर दिया।

आर्यसमाज में प्रवेश : गुरूदत्त ने जब वे स्कूल में ही थे बहुत सी धार्मिक पुस्तकें पढ़ी फिर सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ, और वह २० जून १८८० ई० को ही लाहौर आर्यसमाज में प्रविष्ट हो गए। तथा अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रन्थ) पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। बाद में आपने निघण्टु, निरूक्त और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा वेद भाष्यों को बहुत मनन पूर्वक पढ़ा और वेद विद्या के पीड़ित बन गए। फिर असत्य वेद भाष्यों का प्रबल खण्डन किया। सत्यार्थ प्रकाश को तो उनने १८ बार पढ़ा वे कहते थे कि हर बार उन्हें नवीन ज्ञान प्राप्त हुआ।

दयानन्द से भेंट– जब दयानन्द को १८८३ ई० में जोधपुर में विष दिया गया और चिकित्सा के लिए ५ महीने बाद अक्टूबर में उन्हें आबू होकर अजमेर लाया गया तो स्वामी जी की अस्वस्थता का समाचार फैल गया। लाहौर आर्यसामाज ने स्वामी जी की सेवा के लिए गुरूदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास को अजमेर भेजा। यद्यपि गुरूदत्त की आयु उस समय केवल १६ वर्ष थी परन्तु ज्ञज्ञन, अनुभव और प्रभावशाली वक्ता होने के कारण वह एक नेता माने जाते थे।

महर्षि के सारे शरीर विष के कारण फुंसियां हो गई थीं। शरीर अपेक्षाकृत दुर्बल हो गया था, प्रत्येक श्वास के साथ सख्त पीड़ा हो रही थी। परन्तु महान आश्चर्य था कि इस घोर कष्रूट में भी स्वामी जी पूर्णतः शान्त चित्त थे उनके मुंह से एक आह तक न निकली। अन्तिम समय में महर्षि ने ईश्वर प्रार्थना की, वेद मन्त्र पढ़े और प्राणायाम पूर्वक अन्तिम श्वास निकालने से पहिले कहा, '' हेदयामय। हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! तुरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। आ हा। तैंने अच्छी लीला की।'' उनके मुखमण्डल पर अद्भुत आभा और प्रसन्नता थी। अन्य लोगों के साथ गुरूदत्त यह सब देख सुनकर मन्त्रमुग्ध से रह गए। उनने दयानन्द का ईश्वर से साक्षात् वार्तालाप सुना, ईश्वर के सम्बन्ध में उनके रहे सहे सभी संशय विनष्ट हो गए।

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ३ का शेष

श्री धर्मवीर...

पास व्यवस्था नहीं है अतः मेरी सेवा पूरी हो गई हम बड़े प्रसन्न हैं हमें जाने की आज्ञा दे दीजिए तब बोला तो गुरूजी फिर कब आयोगे? हमने कहा गर्मी आ जाने दे जल्दी ही आयेगें कहकर वहां से पिण्ड छुड़ाया।

यह आर्य समाज के सच्चे मिशनरी उपदेशक का चित्रण है जो यथार्थ है ऐसा समर्पण सहनशीलता आपको मिलेगी कई उदाहरण इसी प्रकार सुनाते रहते थे। जब भी मेरे पास आते थे मैं उन्हें ५१ /– दक्षिणा दिया करता था १९८५–६० के बीच में मुझे लगा कि कम है तब १०१ /– दक्षिणा दी तब देखकर बोले मुझे इतनी दक्षिणा तो ३ दिन प्रचार के बाद देते है आर्य समाज में और आप इतनी बिना प्रचार के दे रहे हो मैंने कहा गुरूजी! आपको तो कोई १ हाजार या १ लाख भी दे दें तो भी कम है फिर आंखों में स्नेहिल आंसू भरकर बोले जा बेटा मुझे भी कभी–कमी नहीं रहेगी। मैंने कहा जब भी इधर आओ बस दर्शन दे दिया करो इतनी ही दक्षिणा मिलेगी चाहे महीने में पन्द्रह दिन में आ जाया करो प्रसन्न होकर आते थे और लोगों से कहते थे मेरा एक होनहार शिष्य हैं आचार्य धर्मपाल हैं।

लोग फिर मेरे से पूछते कि आपने धर्मी जी से क्या पढ़ा है? मैंने पूछा क्यों? कि वे कहते हैं कि आप उनके शिष्य हैं? तब मुझे उनकी आत्मीयता का ज्ञान हुआ मैंने कहा मैंने उनसे समर्पण सीखा है उनसे सहन शीलता सीखी है उनसे वेद प्रचार के प्रति लग्न सीखी है त्याग और तपस्या की वे प्रतिमूर्ति हैं घर पर कोई कमी नहीं है फिर इस अवस्था में दिन रात घूमते रहते हैं उन्हें अपेक्षा नहीं है कोई स्वीकृति लेगा–विज्ञापन में नाम छपेगा दक्षिणा तय होगी किराया भेजेगा कुछ नहीं अपनी डायरी अपनी सवारी अपना परिचय ग्राम से ग्राम होते–होते जिले क्षेत्र पार कर देते साल में अपने आप क्रम बनाकर आते एक ग्राम में लगा सब नहीं आते तो दूसरे मोहल्ले में अगले दिन चले जाते एक ही ग्राम में कहीं यज्ञ कहीं प्रचार करते रहना ही उनका उद्देश्य था प्रचार बिना भोजन नहीं करते रहना ही उनका उद्देश्य था प्रचार बिना भोजन नहीं करते थे उनसे कोई कितना ही सीख ले उनके ज्ञान में कभी नहीं आयेगी यह था उनका व्यक्तित्व वे अपार ज्ञान का भण्डार थे प्रमाणों की झड़ी लगाना उन्होंने महात्मा अमर स्वामी जी से सीखाऊ मुझे भी कभी कहीं उत्सव पर मिल जाते कहते थे आज आपका भाषण अच्छा लगा जब तक प्रमाण रूप में कोई मन्त्र कोई श्लोक कोई उदाहरण नहीं आता भाषण– प्रवचन, अच्छा नहीं लगता मुझे प्रेरित करते रहते थे। आज उनका स्मरण करके उनकी स्मृतियां साक्षात् हो रही हैं स्थानाभाव है बाद में उन्होंने सन्यास आश्रम में प्रवेश किया तब नामकरण स्वामी मोदका नन्द सरस्वती किया मैंने पूछा स्वामी जी नाम अच्छा नहीं है तब बोले मोदक लड्डू को कहते हैं क्योंकि इसका नाम सुनते ही मन में प्रसन्नता बढ़ाये उसका नाम मोदक है उसी में जो आनन्द ले वही मोदकानन्द है सदा प्रसन्न रहना तथा दूसरों को प्रसन्न करने में ही आनन्दित करना यह मेरा जीवन रहा है उसी को पूरा करना चाहता हूँ यह उत्तर सुनकर मन अतीव प्रसन्न हुआ अपने साथ बदाम पीसकर बूरा में मिलाकर उसमें बेसन और घी मिलाकर खाते थे।

जहां भूख लगी खा लिया ऊपर से पानी पी लिया पुस्तकें दवाईयां स्वयं नियमित रखते थे आंखों का सुरमा तो प्रसिद्ध हो गया था रोह तथा जाले के लिए उत्तम था मैं उनसे दवाई लेकर बूढ़ों को निःशुल्क देकर उनका आशर्वाद प्राप्त करता रहता था आज भी कुछ वृद्ध मुझे पूछने गुरूकुल में आते रहते हैं पर क्या करें अब न स्वामी जी रहे न हम ही रहे न दवाई रही कहानी पूरी हो गई।

स्वामी जी की आयु १०० वर्ष हो गई थी भारी शरीर होने से बाहर आना–जाना बन्द हो गया था घर पर पुत्र सेवा करते थे तब मैं उनसे आशीर्वाद लेकर आया था मैं लड्डूओं का डिब्बा लेकर गया था तब देखते ही प्रसन्न होकर बोले बेटा अपने हाथ से ही खिला दे तब लड्डू खिलाकर मोदकानन्द बनाया था कुछ देर बैठकर आया था। चलते समय उनकी आंखें निहार रही थीं मैं भी पीछे मुड़–मुड़कर देख रहा था मन करता था कि और बैठ लूं पर कहीं कार्यक्रम में भी जाना था पर मुझे लग रहा था कि ये दर्शन अन्तिम हैं अब पता नहीं पुनः मिलना होगा या नहीं सम्भतया उन्हें भी ऐसा ही लग रहा था फिर एक बार आकर आशीर्वाद लिया और मैं तथा स्वामी जी दोनों ही अश्रुपूरित हो गये थे रून्धे गले से इतना ही कहा कि बेटा जाओ आर्य समाज का कार्य मेरे से ज्यादा महत्वपूर्ण है उसका ध्यान रखना समय हो तो फिर एक आ जाना।

वही मेरा अन्तिम उनके दर्शन करने एवं अशीर्वाद लेने का क्षण था फिर तो वही हुआ जो होता है मैं उनका स्मरण करता हुआ आर्य समाज के सच्चे सजग प्रहरी तपस्वी सन्त धर्मी जी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्ली अर्पित करता हूँ।

आज के सन्दर्भ में नारी का स्थान

–डॉ0 विजेन्द्र पाल सिंह

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सदैव से सम्मानित रहा है नारी के विषय में कहा गया है कि–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।।

मनु०

अर्थात् जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरूष होके देव संज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती हैं।

–स०प्र० चतुर्थ समु०

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इस विषय पर विशेष रूप से प्रकाश किया है नारी अथवा एक विद्वान माता अच्छी सन्तान की निर्मात्री है शतपथ ब्राह्मण का श्लोक है–

''मात्रमान पित्रमान आचार्यवान पुरूषो वेदः''

स०प्र०द्वि०समु०

माता सन्तान की सर्वप्रथम शिक्षक होती है उसके पश्चात् पिता और तत्पश्चात योग्य आचार्य जहां यह तीनों उत्तम विद्वान हो वह सन्तान अति श्रेष्ठ है–

माता सन्तानकी निर्माता है भगत सिंह चन्द्रशेखर आजाद हो या अन्य क्रान्तिकारी उनकी माताएं धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने देशभक्त सन्तानों को जन्म दिया आज भी राष्ट्र हेतु अनेक जवान बलिदान दे चुके हैं और बलिदानों को तत्पर हैं सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं यह श्रेष्ठ माताओं की ही देन हैं जिनसे देश सुरक्षित है। महाराणा प्रताप शिवाजी के निर्माण में माता का ही पूरा योगदान था। हमारे यहां गार्गी माद्री मदालसा शकुन्तला, मैत्रेयी, कत्यायनी, अनेकों महान सन्नारियां हुयी हैं, करूणावती पदमावती सारन्धा लक्ष्मीबाई सुभद्रा कुमारी जैसी महान नारियों को कौन नहीं जानता आज भी अनेक विद्वान नारियां उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हैं। भारत ऐसा देश है जहां नारी को देवी समान माना गया है हमारी वैदिक संस्कृति में नारी सदैव से पूज्यनीय रही है।

जहाँ–जहाँ पति से पत्नी और पत्नी से पति परस्पर प्रेम से रहते हैं प्रसन्न रहते है उसी घर में उन्नति होती है कहावत है कि विवाह कर सात जन्मों के लिए पति पत्नी का सम्बन्ध हो जाता है अर्थात भारतीय संस्कृति में पति पत्नी के सम्बन्ध को महत्व पूर्ण माना है जिसे ग्रहस्थाश्रम भी कहा जाता है और यह आश्रम अन्य आश्रमियों को चलाने वाला आश्रय देने वाला होता है सन्तान निर्माण होकर वही ब्रह्मचारी, ग्रहाश्रमी वानप्रस्थी, व सन्यासी बनती हैं उच्च पदों पर सुशोभित होती हैं राष्ट्र की निर्माता होती हैं महापुष विद्वान आदि होती हैं।

कैकेयी ने राजादशरथ से दो वरदान मोंगे एक तो राम को चौदह वर्ष का वनवास दूसरे भरत को राजगद्दी, यहां इस आज्ञा का शिरोधार्य किया वह भी कौशल्या के पुत्र थे कौशल्या भारतीय संस्कृति में एक आदर्श नारी नही हैं जिनका चरित्र अनुकरणीय है जिन्होंने महान विद्यावान ज्ञानवान तेजस्वी धनुर्धारी आज्ञाकारी

पालन हेतु राज्य को ठोकर मार दी ऐसी संस्कारवान सन्तान को जन्म देने वाल कौशल्या जैसी महान नारी यहां हुयी।

आज भारत में एक ओर तो नारियां जिलाधिकारी न्यायाधीश मन्त्री वैज्ञानिक आदि हैं, परन्तु, दूसरी ओर आर्थिक, सामाजिक मानसिक रूप से नारियों का शोषण भी हो रहा है स्त्रियों के सामने आज अनेक समस्याऐं हैं। बेटी बचाओं। भ्रूण हत्या। बेटी पढ़ाओ आदि अनेक कार्यक्रम चल रहे हैं परन्तु आज कोर्ट कचहरी में महिलाओं पर आत्याचार व दमन के मामलों की भीड़ लगी हुयी है और मुकदमों की सहस्रों फाइलें कोर्ट में हैं कचहरी में वह कई कई वर्षों तक चक्कर लगाती रहती हैं और तक तक उनकी उम्र ढल चुकी होती है। जब उनको न्याय मिलता है काफी उम्र निकल चुकी होती है न्याय प्रक्रिया में अति विलम्ब होता है वह पुनः इस योग्य नहीं रहती कि नया घर बसा कर नया जीवन जी सकें और उस पुराने दुःख के समय को भुला सकें।

आज भी नारी दमन चक्र में जी रही है नारी का सम्मान कागजों में ही है सच्चाई तो उससे अलग ही है क्योंकि दहेज पीड़िता को जो यातनाऐं आज ससुराल में मिलती हैं उसे जिस भांति प्रताड़ित किया जाता है आगे उसे झूठा बता न्याय में ढील कर दी जाती है क्योंकि वधु जो ससुराल में रही उस पर अत्याचार हुए वह अभी जीवन के उतार चढ़ाव दांव पेंच से अनभिज्ञ थी जिन बातों को चालाकी, क्रूरता, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष आदि को करने वाली सास उसे पल–पल प्रताड़ित करती थी श्वसुर, देवर, ननद भी प्रताड़ित करते रहते थे उस वधु ने जीवन में जो अपने सुन्दर से घर के स्वप्न देखे थे पति महोदय ने प्रतिदिन वधु को यातनाऐं देकर मिट्टी में मिला दिए दिन रात दहेज की अतिरिक्त मांग! कहां से लाएगी वह जो अपने माता–पिता भाई सबको छोड़ सुसुराल आ गयी। न्याय हेतु भी उसे ठोंकरे खानी पड़ती हैं जीवन निकल जाता है, चप्पल घिसते–घिसते अन्त में मिलती है तन्हाई जब तक उसके माता पिता भी अन्तिम श्वास ले चुके होते हैं। उसको ससुराल से भी कुछ नहीं मिल पाता जीवन में मिलता है अंधेरा और दुःखी जीवन की यादें। कोर्ट कचहरी जा कर देखें चारों ओर उस अबला नारी का शोषण होता है पैसा पास नहीं होता पैसा जेवर समान ससुराल में ही तो रह जाता है। बेसहारा हो दर–दर की ठोंकरे खाने को मिलती हैं कहने की बातें है नारी का स्थान पुरूष के बराबर ही होता तो इस प्रकार सतायी न जाती। बलात्कार, लूटपाट, अपहरण, दहेज प्रताड़ना व दहेज हत्या की भेंट चढ़ रही है आज की नारी।

पृष्ठ ४ का शेष

मुनिवर पं0 गुरूदत्त...

गुरूदत्त के कार्य : लाहौर में ८ नवम्बर १८८३ को महर्षि दयानन्द की स्मृति में डी०ए०वी० कालेज की स्थापना का विचार किया गया। गुरूदत्त के ओजस्वी भाषण से तत्काल सात हजार रूपए एकत्र हो गए। वह बहुत ही प्रभावशाली वक्ता थे अतएव वार्षिकोत्सवों पर उनकी बहुत मांग रहती थी और वे वहां से डी.ए.वी. स्कूल के लिए प्रभूत राशि भिजवाते थे। उनने वेदों का स्थान आधुनिक विज्ञान से उच्चतर प्रमाणित किया। उनने सायण, महीधर और मैक्समूलर आदि के वेदभाष्यों को निरूक्त विरूद्ध सिद्ध किया। वैदिक संज्ञा विज्ञान पर उनने कई सारगर्भित लम्बे लेख लिखे। उनका लिखा वैदिक शब्द कोष ''आक्सफोर्ड विद्यालय में पढ़ाया जाता था।

गुरूदत्त अपनी विदता व वैदिक ज्ञान के कारण पंडित प्रसिद्ध हुए। बचपन से ही मुनियों जैसी एकाग्रता तथा प्राणायाम में रूचि व अभ्यास के कारण वे मुनिवर कहलाये। मुनिवर पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी को हमारी सादर प्रमामांजलि। हम उनसे कुछ सीखें और उनके दिखाए मार्ग पर दृढ़ता से अनुसरण करें।

अत्यन्त युक्ति संगत होगा। स्वयं वेदों के तात्पर्य तर्क और युक्ति तथा पुरातत्व के बारे में हमारी बढ़ती हुई जानकारी से यह पूरा मेल खाती है। वेद एक ही देव को अनेक नामों से तथा शक्तियों से स्मरण करते हैं। वे दैवी नियमों और मान्यताओं की प्रशंसा करते हैं। इतना ही नहीं वे इन नियमों के पालन की अभिलाषा भी रखते हैं। वेद में ब्रह्माण्ड के नियमों की भी चर्चा है।

वेद के ''प्रकट'' होने के संबंध में मुझे अधिक कहने की गुंजाइश नहीं है। इतना कहना ही यथेष्ट है कि इसमें भी दयानन्द की मान्यता युक्तिपूर्ण है। इस स्थापना के लिए उन्हें वेतुका कहना नितान्त गलत है। सिद्धान्त रूप से जगत में तीन मौलिक सत्ताएं हैं। ईश्वर प्रकृति और जीव–यदि हम जीवन को समझना चाहें तो इन तीनों की सत्ता को हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा और साथ ही इनके पारस्परिक सम्बन्धों को भी जानना पड़ेगा। अब यदि दयानन्द ने दृढ़ता के साथ कहा कि वेद ईश्वर, के बारे में ज्ञान देते हैं। प्रकृति के नियमों का वर्णन करते हैं, और जीव का ईश्वर और प्रकृति का नाता दर्शाते हैं? तो वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं तो और क्या है? यदि दयानन्द ने बताया कि वेद यह सब करते हैं तो ये भ्रमातीत धर्म ग्रन्थ, अवश्य हैं। शेष उनके प्रकट होने का क्रिया हामरी जाति, मानव की मनोवैज्ञानिक उपलब्धि और भावना पर निर्भर करती है।

आधुनिक विचार–धारा प्रकृति और उसके नियमों को तो स्वीकार करती है किन्तु ईश्वर की सत्ता से इन्कार करती हुई, ईश्वरीय ज्ञान के ''प्रकट'' होने की बात करती है। परन्तु इसी विचार–धारा ने और भी कई तथ्यों को अस्वीकार किया था– पर अब इन्हें नई खोजों के कारण स्वीकृति दे दी है।

हम एक अद्वितीय, महान विद्वान से यह अपेक्षा नहीं रखते कि वह इस प्रकार की अभद्र और भ्रान्तिपूर्ण सम्मतियों तथा अनिश्चित परिकल्पनाओं के आगे झुक जाय। उसकी महानता तो इसी में है कि वे दूर की देखते हैं और गम्भीरता पूर्वक देखते हैं।

''वेदों की व्याख्या के बारे में मेरा निश्चय मत है कि अन्तिम सर्वमान्य व्याख्या जो भी होगी–जब भी होगी तो दयानन्द को सत्य–अर्थ के सर्वप्रथम प्रवर्तक का स्थान प्राप्त होगा।'' प्राचीन अव्यवस्था और अंधकारमय युग और शतब्दियों से चली आ रही भ्रान्तियों के दुर्ग को भेद कर दयानन्द की पैनी दृष्टि ''सत्य'' तक पहुंची और जो सार–भूत था उसे प्राप्त किया। उन्होंने कुञ्जियों को खोजा तथा उनके द्वारों को खोला जो समय की कालकोठरी में बन्द पड़े थे, और कारा रूद्ध स्रोतों पर अवरोधों को तोड़ डाला।

वेदों में आधुनिक अद्भुत विज्ञान

–डॉ0 विक्रम कुमार 'विवेकी'

आज का विज्ञान चामत्कारिक युग है। जिस काम को हम अधिकांश रूप में आ–जा करते करते थे, वे सब आज घर बैठे ही कर लेते हैं। दूरस्थ मित्रों एवं पारिवारिक जनों से अब आमने–सामने जैसी भेंटवर्ता, समाचारों एवं भाषणों का सम्पूर्ण विश्व में लाइव टेलिकास्ट (जीवन्त प्रसारण), विविध खेलों का क्रीड़ांण से भी अधिक सुविधाजनक एवं सटीक दर्शन, विविध युद्धों, कक्षाओं में दिये जाते हुए लेक्चरों, पृथिवी, ग्रह–नक्षत्रों, अनन्त आकाश व समुद्र की अतल गहराइयों में घटती हुई घटनाओं का यथार्थ दर्शन एवं श्रवण हम बेडरूम में बैठे बैठे ही कर लेतें हैं। यह सब कैसे हो रहा है? यह एक यज्ञ प्रश्न है। परन्तु उत्तर वैज्ञानिक है और यह उत्तर ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र में है। पाठक पढ़कर चौंक रहे होंगे, परन्तु यह शाश्वत सत्य है। इस सत्य को जानने के लिए आइये हम वैदिक यात्रा करते हैं।

वेद शब्द को प्रायः सबने सुना है। जिसका साक्षात् अर्थ है ज्ञान (नॉलेज)। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ही उपर्युक्त विज्ञान की सूक्ष्म चर्चा है। मन्त्र है– ''अग्निमीडे पुरोहतं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।'' इस मन्त्र में छोटा सा वाक्य है– 'अग्निम् ईडे', जिसका अर्थ है मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ। शेष शब्द अग्नि के पाँच विशेषण हैं।

यह अग्नि क्या है, कैसी है, कौन सी है, कहां है, क्या करती है, इसका स्वरूप एवं स्वभाव क्या है? आदि अनेक प्रश्न उठते हैं, जिनके समाधान इसी मन्त्र के विशेषणों में तथा अन्य अगले आठ मन्त्रों में *स्थान–स्थान पर दिये गये हैं। समग्र वैदिक वाङ्मय में* अग्नि के मुख्यतया तीन स्वरूप बताये गये हैं। वे हैं १ सूर्याग्नि, २. विद्युदग्नि, ३. पार्थिवग्नि। अग्नि शब्द के दर्जनों अर्थ होते हैं जिनको स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत भाष्य में देखा जा सकता है। जैसे–ईश्वर, अध्यापक, नायक आदि, परन्तु यहां विज्ञान के क्षेत्र में केवल अग्नि से ही तात्पर्य है। उपर्युक्त तीनों अग्नियां भौतिक अग्नि ही हैं। पंच महाभूतों में जो अग्नि नामक भूत–तत्व है उसी के ही ये तीन स्वरूप हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी नामक पाँच महाभूतों से पाठक सुपरिचित हैं। पार्थिवअग्नि तो वह है जो रसोईघर आदि में प्रज्वलित होकर हमारी सेवा करती है। सूर्याग्नि के बिना सृष्टि की परिकल्पना तक नहीं की जा सकती है। विद्युदग्नि इन सब में अद्भुत है जो उपर्युक्त समग्र विज्ञान का आधार तत्व हैं।

कम्प्यूटर या मोबाइल आदि में दो तत्व मुख्य हैं–ठोस पदार्थ एवं सूक्ष्म पदार्थ (हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर)। ठोस पदार्थ स्थूल होता जो दिखाई देता है, सूक्ष्म पदार्थ अदृश्य होता है। विद्युत अग्नि करण्ट के रूपमें अदृश्य ही होती है। यही मुख्य सॉफ्टवेयर है। इसके बिना किसी भी विज्ञान का आविर्भाव ही असम्भव है। विद्युत की गति विस्मयकारिणी है। इसी के कारण ही मोबाइल, कम्प्यूटर आदि सक्रिय होकर वास्तविक परिणाम दे पाते हैं। विद्युत् न हो तो ये सब केवल पार्थिव निष्क्रिय तत्व ही होते हैं। एक ही घर में बैठे दो सदस्य मोबाइल में जब बातें करते हैं तो उनकी पारस्परिक शारीरिक दूरी एक कमरे से दूसरे कमरे तक की होती है, परन्तु यह कितना वैज्ञानिक सत्य है कि उनके वार्तालाप की ध्वनि उपग्रहों के माध्यम से हजारों किलोमीटर की द्रुतगति से विद्युत् अग्नि (स्पैक्ट्रम) के माध्यम से एक–दूसरे तक स्पष्टतया पहुंच रही होती हैं। विद्युत् न हो तो ये सब संसाधन निरर्थक हैं।

इसरो ने फरवरी में एक साथ १०४ उपग्रह छोड़ने का रिकार्ड बनाने के बाद अपने 'पी.एस.एल.वी. ' प्रक्षेपण यान से ३१ उपग्रह लान्च किए, जिसमें २६ नैनो उपग्रह अन्य देशों के थे। इसमें भारत का जो उपग्रह है वह सरहद एवं पड़ोसी देशों पर निगाह रखता है। यह उपग्रह ५०० किलोमीटर की ऊँचाई से पड़ोसी देश के टैंकों की गिनती तक कर सकता है। सर्जिकल स्ट्राइक ने चित्रों का सम्प्रेषण भी इन उपग्रहों के द्वारा ही हुआ है। इन उपग्रहों काम का पूर्ण होने के बाद भी वे अपनी कक्षा में ३० हजार किलोमीटर प्रति सेकेण्ड की भीषण रफ्तार से घूमते रहते हैं। पाठक यहां थोड़ी देर तक अन्तश्क्षु से विद्युत गति की परिकल्पना करें। जाहिर है कि इन उपग्रहों का प्रेक्षेपण, फिर उन्हें वांछित ऊँचाई की कक्षा में स्थापित करना, उन्हें नियन्त्रित करना, उनसे प्राप्त महत्वपूर्ण डेटा का सही स्तेमाल करना एक बड़ी जटिल टेक्नोलॉजी का नतीजा है। ऐसे–ऐसे राडार बनाए गये हैं, जो ३० सेंटीमीटर तक के आकार की चीजों का १००० किलोमीटर की दूरी से ही पता लगा लेते हैं। इन दूरसंवेदी उपग्रहों की मदद से धरती के भीतर के खनिज भण्डारों का भी पता लगाया जाता है। यह सब कैसे हो रहा है? सूर्य, पृथिवी अन्य ग्रह नक्षत्रों का आकार व पारस्परिक दूरी का सटीक ज्ञान कैसे लगाया गया है? विमानों की गति, गति का नियन्त्रण, शारीरिक एवं वाह्य समस्त यन्त्रों का संचालन, समग्र ब्रह्माण्ड की समस्त गतिविधियां इसी अग्निविद्या पर ही तो आधारित हैं। यह अग्नि सर्वत्र एवं हमारे सम्मुख सर्वदा विद्यमान है। इसलिए ऋग्वेद के महामंत्र में पहला विशेषण कहा गया है– 'पुरोहितम्' अर्थात् जो अग्नि के रूप में, आर्कषण शक्ति के रूप में, विद्यमान है। 'पुरोहित' शब्द का तात्पर्य केवल मन्दिर का पुजारी या पण्डित ही नहीं होता। पण्डित को भी पुरोहत इसलिए कहते हैं कि वे हमारे अग्रणी मानी जाते हैं– अस्तु।

यह अग्नि अग्रणी है। निरूक्तकार यास्क ने भी लिखा है– अग्निरग्रणिर्भवति, पुरः एनं दधति'' अर्थात् अग्नि अग्रणी इसलिए है क्योंकि यह सबसे आगे रखती है, विज्ञान इस अग्नि तत्व के बिना पंगु है। यह न तो सोचिए जीवन कितना दूभर हो जाए।

यह अग्नि 'यज्ञस्व देवम्' भी है। यज्ञ का देवता है। यज्ञ से तात्पर्य केवल यज्ञकुण्ड की अग्नि मात्र अर्थ नहीं है। 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' के अनुसार प्रत्येक श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है और यह अग्नि उन समस्त श्रेष्ठकर्मों का देव है। 'देवो दानाद् वा दीपनाद् वा द्युस्थानो भवतीति वा' (निरूक्त) बहुत कुछ देने, प्रकाशित होने व द्युलोक में भी उसकी सत्ता होने के कारण अग्नि 'देव' कहलाता है। यह अग्नि ऋत्विक् भी है अर्थात् ऋतुओं मौसमों का निर्माता है। इसे होता भी कहा गया है क्योंकि यह शिल्प क्रियाओं से उत्पन्न करने योग्य पदार्थों का देनेहारा है। इसे 'रत्नधातमम्। भी कहा है क्योंकि यह अच्छे–अच्छे सुवर्ण आदि रत्नों का धारक तत्व है। सुवर्ण अग्नि का ही रूपान्तरण है। यहां हम पाठकों से निवेदन करना चाहेंगे कि वे ऋग्वेद के इस मन्त्र एवं परवर्ती अन्य मन्त्रों का दयानन्द सरस्वती के द्वारा कृत अर्थ एवं परवर्ती अन्य मन्त्रों का दयानन्द सरस्वती के द्वारा कृत अर्थ एवं विस्तृत भाष्य को पढ़े व गहन चिन्तन करें। स्वामी जी लिखते हैं–'' यास्क मुनि ने स्थौलाष्ठीवि ऋषि के मत से 'अग्नि' शब्द का 'अग्रणी' अर्थात् सबसे उत्तम अर्थ किया है अर्थात् जिसका सब यज्ञों में पहिले प्रतिपादन होता है वह सबसे उत्तम ही है। इस कारण अग्नि शब्द से ईश्वर तथा दाहगुण वाला ''भौतिक अग्नि' इन दो ही अर्थों का ग्रहण होता है।''

अब भौतिक अर्थ के ग्रहण करने में प्रमाण दिखलाते हैं (यदश्व) इत्यादि शतपथ ब्राह्मण के प्रमाणों से अग्नि बैल के समान सब देश–देशान्तरों में पहुंचाने वाला होने के कारण 'वृष' और 'अश्व' भी कहाता है, क्योंकि वह कलाओं के द्वारा 'अश्व' अर्थात् शीघ्र चलने वाला होकर शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान लोगों के विमान आदि यानों को वेग से वाहनों के समान दूर–दूर देशों में पहुंचाता है। (अग्निमीडे) की ही उन्नति थी। आप ही आप प्रकाशमान सबका प्रकाश और अनन्त ज्ञानवान आदि हेतुओं करकि अग्नि शब्द करके परमेश्वर तथा रूप, दाह, प्रकाश, वेग, छेदन आदि गुण और शिल्प विद्या के मुख्य साधक आदि हेतुओं से प्रथम मन्त्र में भौतिक अर्थ का ग्रहण किया है।

अगले द्वितीय मन्त्र में 'अग्नि' को लेकर स्वमी जी ने अध्यापक, विद्यार्थी एवं वैज्ञानिकों को इस प्रकार परामर्श दिया है– वह (अग्नि नित्य खोजने योग्य है।

हम यहां दावे के साथ कहना चाहेंगे कि आज जिस तकनीक 'टेक्नोलॉजी' ने तहलका मचाया हुआ है, सॉफ्टवेयर की तकनीकी से प्रतिदिन नये–नये आविष्कार सम्मुख आ रहे हैं। दो–चार महीनों में नई तकनीक के कारण मोबाइल पुराने हो रहे हैं, नई तकनीक से सजे मोबाइल शीघ्र गति से आ रहे हैं, ये सब अग्नि शब्द की ही प्रैक्टिकल व्याख्या मात्र हैं। मैं इस साइंस का ऋग्वेद के इस प्रथम मन्त्र की प्रैक्टिकल कमेण्ट्री मानता हूँ और इन वैज्ञानिकों को भी ऋषि–कलप मानता हूँ, ऋषि–पुत्र मानता हूँ। इसकी ओर भी स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में इस प्रकार संकेत किया है– ''जो सब विद्याओं को पढ़ के औरों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सबका उपकार करने वाले हैं वा हुए हैं वे पूर्व शब्द से और जो अब पढ़ने वाले विद्या ग्रहण के लिए अभ्यास करते हैं वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं और वे सब पूर्ण विद्वान् शुभगण सहित होने पर, ऋषि कहाते हैं।''

''और जो सर्वत्र परमेश्वर ने पूर्व और वर्तमान अर्थात् त्रिकालस्थ ऋषियों को अपने सर्वज्ञपन से जानके इस मन्त्र में परमार्थ औरव्यवहार ये दो विद्या दिखलाई हैं, इससे इसमें भूव वा भविष्यकाल की बातों के कहने में कोई भी दोष नहीं आ सकता, क्योंकि वेद सर्वज्ञ परेमेश्वर का वचन है। वह परमेश्वर उत्तम गुणों को तथा भौतिक अग्नि व्यवहार कार्यों में संयुक्त किया हुआ उत्तम–उत्तम भोग के पदार्थों का देने वाला होता है। पुराने की अपेक्षा एक पदार्थ से दूसरा नवीन और नवीन की अपेक्षा पहिला पुराना होता है।

देखों यही अर्थ इस मन्त्र का निरूक्तकार ने भी किया है कि – प्राकृत जन अर्थात् अज्ञानी लोगों ने जो प्रसिद्ध भौतिक अग्नि पाक बनाने आदि कार्यों में लिया है, वह इस मन्त्र में नहीं लेना, किन्तु सबका प्रकाश करने वाला परमेश्वर और सब विद्याओं का हेतु जिसका नाम विद्युत है, वही भौतिक अग्नि यहां अग्नि शब्द से लिया है।''

वेदों में अश्विनौ' शब्द की भी चर्चा यत्र–तत्र बहुत मिलती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस 'अश्विनौ' शब्द की अभूतपूर्व व्याख्या करते हैं। प्राचीन निरूक्त आदि के प्रमाणों तथा स्वोपज्ञ 'योगज–बुद्धि' से विज्ञान से सम्बन्धित अनेक रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'नौकाविमानादि विषयः' प्रकरण में वे लिखते हैं–

''वायु और अग्नि आदि का नाम 'अश्वि' है, क्योंकि सब पदार्थों में 'धनंजय' रूप करके वायु और 'विद्युत' रूप से अग्नि ये दोनों व्याप्त हो रहे हैं तथा जल और अग्नि का भी 'अश्वि' है क्योंकि अग्नि ज्योति से युक्त और जल रस से युक्त हो के व्याप्त हो रहा है। 'अश्वै' अर्थात् वे वेगादि गुणों से युक्त हैं। जिन पुरूषों को विमान आदि सवारियों की सिद्धि की इच्छा हो, वे वायु, अग्नि और जल से उनको सिद्ध करें।

आर्य समाज लल्लापुर का वर्षिकोत्सव एवं कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ ।

आर्य समाज लल्लापुर (वाराणसी) का वार्षिकोत्सव दिनॉक 29/12/2017 से लेकर 31/12/2017 तक बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमे मातृमन्दिर वाराणसी की प्रचार्या डा0 गायात्री आर्या जी के सानिध्य में कान्याओं द्वारा वेद पाठ किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन महिला सम्मेलन हुआ जिसमे मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला जयसवाल जी (वाराणसी) रहीं तथा पाणनी कन्या विद्यालय की आचार्या डा0 प्रति आर्या विमर्शिनि जी एवं डा0 गायत्री आर्या जी के सम्बोधन ने महिला सम्मेलन को अन्धविश्वास से जागरूक होने की प्रेरणा मली।

कार्यक्रम अन्तिम दिवस पर पूर्वांचल सम्मेलन मे श्री बेचनराम आर्य जी की अध्यक्षता मे आर्यवीर दल के विस्तार के लिये तथा आर्यवीर दल की शाखाओं को लागाने पर विचार रखा गया कार्यक्रम में मुख्यरूप से मुख्यवक्ता आचार्य प्रशास्तमित्र जी, आचार्य विश्वव्रत जी, भजनोपदेशक पं0 हरीश शास्त्री, वालकृण्ण जी, आदि के प्रवचन एवं भजनों से आर्यजनो को प्रेरणा मिली। श्री अखिलेश आर्य जी (मन्त्री) श्री लक्ष्मीनारायण आर्य (प्रधान) श्री दिलीप आर्य प्रचार मन्त्री श्री जयप्रकाश आर्य (कोषाध्यक्ष) आदि अधिकारीगण कार्यक्रम में उपस्थित रहे ।

पेट, नाक या आत्मा

: स्वामी समर्पणानन्द
('समर्पण शती सौरभम्' से साभार)

संसार में गरीब दो प्रकार के हैं – एक वे जिनका पेट नहीं भरता और दूसरे वे जिनकी तृष्णा का पेट नहीं भरता। पेट तो पेट भर अन्न मिलने से भर जाता है परन्तु तृष्णा का पेट तो सारे संसार की सम्पत्ति एक आदमी को दे दो तब भी नहीं भरता। ये जो करोड़पति और *अरबपति सैकड़ों प्रकार की बेईमानियाँ* और जालसाजियाँ कर रहे हैं यह पेट भरने के लिए तो नहीं कर रहे। यह सारा पाप तो नाक के लिए किया जा रहा है। संसार में हर आदमी बड़ा कहलाना चाहता है, अपनी नाक ऊँची करना चाहता है और आज बड़ा आदमी वह कहलाता है जिसके पास पैसा बहुत है। इसलिए आज हर एक आदमी ईमान बेचकर पैसा कमाना चाहता है। इसलिए पैसे की तृष्णा बढ़ती जा रही है। और इसीलिए करोड़पति भी अपने को कंगाल कहता है क्योंकि वह अरबपति नहीं है। यदि वह केवल पेट की पूर्ति पर संतोष कर सकता तो पेटपूर्ति से बचा हुआ धन वह प्रजा के कल्याण में लगाता, क्योंकि प्रजा के कल्याण में धन लगाने से जो अध्यात्मिक शान्ति अनुभव होती है वह ऊँची नाक के सुख से भी कहीं ऊँची है और जिस देश की प्रजा में इस प्रजा के सुख अनुभव करने वाली त्यागी धनी पुरूषों को सबसे ऊँचा माना जाय वहाँ ऊँचा ऊँचा हृदय तथा ऊँची नाक दोनों एक ही दिशा में बढ़ते हैं। तब प्रजा की कंगाली बहुत आसानी से दूर हो जाती है।

नव वर्ष स्वीकार नहीं

नये साल नया कुछ हो तो सही
क्यों नक़ल में सारी अक्ल बही
उल्लास मंद है जन-मन का
आयी है अभी बहार नहीं
ये नव वर्ष हमे स्वीकार नहीं
है अपना ये त्यौहार नहीं
ये धुंध कुहासा छंटने दो
रातों का राज्य सिमटने दो
प्रकृति का रूप निखरने दो
फागुन का रंग बिखरने दो
प्रकृति दुल्हन का रूप धार
जब स्नेह – सुधा बरसायेगी
शस्य – श्यामला धरती माता
घर-घर खुशहाली लायेगी
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि
नव वर्ष मनाया जायेगा
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर
जय गान सुनाया जायेगा
युक्ति – प्रमाण से स्वयंसिद्ध
नव वर्ष हमारा हो प्रसिद्ध
आर्यों की कीर्ति सदा-सदा
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
अनमोल विरासत के धनिकों को
चाहिये कोई उधार नहीं
ये नव वर्ष हमे स्वीकार नहीं
है अपना ये त्यौहार नहीं
है अपनी ये तो रीत नहीं
है अपना ये त्यौहार नहीं

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

आर्यों ! देश बचाओ

– पं. नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक

स्वामी दयानन्द बन जाओ, करो राष्ट्र उद्धार, आर्यों, देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।।
किसी समय भारत में घर–घर, यज्ञ–रचाए जाते थे।
संन्यासी विद्वान तपस्वी, वैदिक कथा सुनाते थे।।
ईश्वर भक्त निराले थे, करते थे सद्व्यवहार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
राम कृष्ण से महापुरूष थे, अर्जुन से थे वीर यहां।
चन्द्रगुप्त विक्रम जैसे थे, देश भक्त रणधीर यहां।।
जो कहते थे, करते थे वे, भारत से था प्यार, आर्यों देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
पाखण्डी बढ़ गऐ देश में, जनता को बहकाते हैं।
ईश्वर की पूजा छुड़वाकर, निज पूजा करवाते हैं।।
कोठी बंगलों में रहते हैं, दगाबाज मक्कार आर्यों! देश बचाओ।।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।।
माता–पिता, दादा–दादी की, होती नहीं यहां सेवा।
वृद्ध जनों की सेवा से, मिलती हे यश रूपी मेवा।।
बिगड़ गया है, युवक–युवतियों का अचार–विचार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
एक–एक कुट धरती पर, लड़ते हैं भाई–बहिन यहां।
अज्ञानी बन गए अभागे, तनिक न करते सहन यहां।।
आपाधापी मची हुई, चहुंदिश है मारामार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
नेता है बेशर्म शराबी, खाते अण्डे मांस यहां।
धूर्त स्वार्थी हत्यारों का, कौन करे विश्वास यहां।।
धन–संग्रह में लगे हुए हैं, भूल गये करतार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
देश–धर्म से प्यार नहीं है, करते हैं नित घोटाले।
आस्तीन में छिपकर बैठे, नाग पौनियां हैं काले।
गउओं की गर्दन पर नित, चलती है, यहां कटार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।
दयानन्द के वीर सैनिको! कर्मक्षेत्र में बढ़ जाओ।
बनो लाजपत, बिस्मिल, शेखर, काम करो आगे आओ।
''नन्दलाल निर्भय'' दुष्टों का, कर दो अब संहार, आर्यों! देश बचाओ।
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो वेद प्रचार, आर्यों! देश बचाओ।

॥ ओ३म् ॥
हरिः पवित्रे अर्षति । ऋग्वेद-9-3-9
दुःखों को हरने वाला परमात्मा पवित्र हृदय में प्रगट होता है, अतः पवित्र विचार ही रखने चाहिए।
वार्षिकोत्सव-108 कुण्डीय देवयज्ञ एवं वेदकथा
दिनांक : 21 एवं 22 जनवरी, 2018 (रविवार एवं सोमवार)
स्थान : आर्ष गुरुकुलम् विद्यामन्दिर, गुरुकुल नगरम्
रसूलपुर कायस्थ, निकट शुक्ला चौराहा, जानकीपुरम्-लखनऊ
कार्यक्रम विवरण
प्रातः 8:00 बजे से अपराह्न 3:10 बजे तक – 108 कुण्डीय यज्ञ, भजनोपदेश, प्रवचन एवं परिपूर्ण जलपान तथा भोजन
निवेदक : सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, लखनऊ
सहयोगी संस्था : जिला वेद प्रचार संगठन, लखनऊ
सम्पर्क सूत्र –
7783937455, 9161053864, 9839950121, 9415610502

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दू., फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य द्वारा
गरीब एवं असहाय व्यक्तियों को लखनऊ में कम्बल वितरित करते हुए।

आर्य समाज नजीबाबाद बिजनौर के वार्षिक सम्मेलन की झलकियां

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी के वार्षिक सम्मेलन की झलकियां

आर्य समाज लल्लापुरा का वार्षिकोत्सव

स्वामी गुरूकुलानन्द महाराज जी से
वानप्रस्थ दीक्षा लेते हुए वंशी लाल आर्य

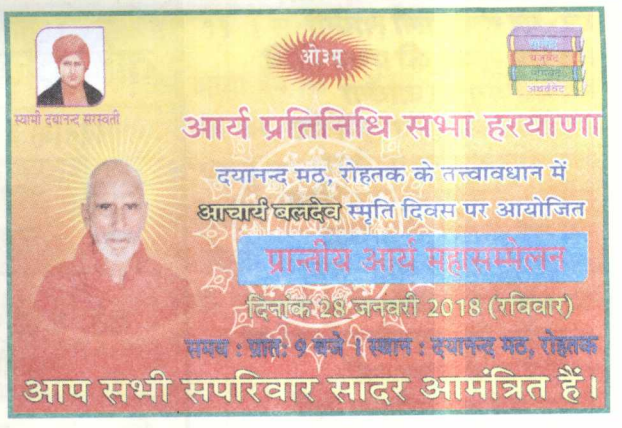

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।